शनि देव व्रत कथा PDF

एक बार नौ ग्रहों में इस प्रश्न पर बहस छिड़ गई कि स्वर्ग में कौन सबसे बड़ा है। सभी देवता निर्णय के लिए देवराज इंद्र के पास पहुंचे और कहा- हे देवराज, आपको निर्णय करना है कि हममें से बड़ा कौन है? देवताओं का प्रश्न सुनकर इंद्र भ्रमित हो गए, तब उन्होंने सभी को पृथ्वी लोक में राजा विक्रमादित्य के पास जाने का सुझाव दिया।

सभी ग्रह राजा विक्रमादित्य के दरबार में पहुंचे। जब ग्रहों ने राजा विक्रमादित्य से अपना प्रश्न पूछा तो वे भी कुछ समय के लिए परेशान हो गए क्योंकि सभी ग्रह अपनी-अपनी शक्तियों के कारण महान थे। उनके कोप के प्रकोप से किसी को भी छोटा या बड़ा कहना भारी हानि पहुँचा सकता है।

अचानक राजा विक्रमादित्य को एक उपाय सूझा और उन्हें सोना, चांदी, कांसा, तांबा, सीसा, रांगा, जस्ता, अभ्रक और लोहे जैसी विभिन्न धातुओं से बने नौ आसन मिले। आगे सोना और पीछे लोहे का आसन रखा हुआ था। उन्होंने सभी देवताओं को अपने-अपने आसन पर बैठने को कहा। उन्होंने कहा- स्वीकार करें जिसके पास आसन होगा, जिसकी सीट पहले होगी वह सबसे बड़ा होगा और जिसके बाद होगा वह सबसे छोटा होगा।

लोहे का आसन सबसे पीछे होने के कारण शनिदेव समझ गए कि राजा ने मुझे सबसे छोटा बना दिया है। इस फैसले से शनिदेव नाराज हो गए और कहा- हे राजन, आपने मुझे सबसे पीछे बैठाकर मेरा अपमान किया है। तुम मेरी

pdfinbox.com

शक्तियों से परिचित नहीं हो। सूर्य एक राशि में एक महीने, चंद्रमा दो महीने दो दिन, मंगल डेढ़ महीने, बुध और शुक्र एक महीने, गुरु तेरह महीने तक रहता है, लेकिन मैं किसी भी राशि में ढाई साल तक रहता हूं। साढ़े सात साल। जब तक मैंने बड़े-बड़े देवताओं को अपने कोप से पीड़ित नहीं किया है, तब तक मैं जीवित हूँ, अब तुम भी मेरे कोप से सावधान रहना। इस पर राजा विक्रमादित्य ने कहा- भाग्य में जो होगा देखा जाएगा।

इसके बाद अन्य ग्रहों के देवता तो प्रसन्न होकर चले गए, लेकिन शनिदेव बड़े क्रोध के साथ चले गए। कुछ समय बाद जब राजा विक्रमादित्य की साढ़े साती की दशा हुई तो शनिदेव ने घोड़ों के व्यापारी का रूप धारण किया और बहुत से घोड़ों को लेकर विक्रमादित्य की नगरी में पहुंचे। उन घोड़ों को देखकर राजा विक्रमादित्य ने अपनी सवारी के लिए एक अच्छा घोड़ा चुन लिया और उस पर सवार हो गए। राजा जैसे ही उस घोड़े पर चढ़ा, वह बिजली की गति से दौड़ा। तेज दौड़ता हुआ घोड़ा राजा को दूर जंगल में ले गया और फिर राजा को वहीं गिरा कर गायब हो गया। राजा अपने नगर लौटने के लिए जंगल में भटकने लगा लेकिन उसे कोई रास्ता नहीं मिला। राजा को भूख और प्यास लगी। बहुत भटकने के बाद उसे एक चरवाहा मिला। राजा ने उससे पानी माँगा। पानी पीकर राजा ने अपनी अंगूठी चरवाहे को दे दिया और उस व्यक्ति से रास्ता पूछकर जंगल के रास्ते से शहर की तरफ चला गया।

नगर पहुंचकर राजा एक सेठ की दुकान पर बैठ गया। राजा के कुछ देर दुकान पर बैठने के बाद सेठ की खूब बिक्री हुई। सेठ ने राजा को भाग्यशाली समझा और फिर भोजन करने के लिए बैठ गया सेठ के घर खूंटी पर एक तरफ सोनी कहा लटका हुआ था उसके बाद सेठ राजा को उस कमरे में अकेला छोड़कर कुछ देर के लिए बाहर की तरफ निकल गया। तभी एक अदभुत घटना घटी। राजा

pdfinbox.com

की दृष्टि में खूंटी सोने के उस हार को निगल गई। जब सेठ ने हार गायब देखा तो उसे राजा पर चोरी का संदेह हुआ और उसने अपने सेवकों से कहा कि इस विदेशी को रस्सियों से बांधकर नगर के राजा के पास ले जाओ। राजा ने विक्रमादित्य से हार के बारे में पूछा तो उसने बताया कि खूंटी ने हार को निगल लिया है। इस पर राजा को गुस्सा आया और उसने चोरी के अपराध में विक्रमादित्य के हाथ पैर काटने का आदेश दिया उसके बाद सैनिकों ने विक्रमादित्य के हाथ पैर काट कर उनको सड़क पर फेंक दिया।

कुछ दिन बाद एक तेली उसे उठाकर अपने घर ले गया और कोल्हू पर बिठा दिया। राजा आवाज देकर बैलों को चलाता था। इस प्रकार तेल का बैल चलता रहा और राजा को भोजन मिलता रहा। शनि के प्रकोप के साढ़े सात साल पूरे होने के बाद बारिश का दौर शुरू हो गया। एक रात विक्रमादित्य मेघ मल्हार गा रहे थे, तभी नगर की राजकुमारी सुहावने रथ पर उस घर के पास से गुजरीं। जब उसने मल्हार को सुना तो उसे अच्छा लगा और उसने नौकरानी को गायक को बुलाने के लिए भेजा। दासी लौटी और राजकुमारी को अपंग राजा के बारे में सब कुछ बता दिया। राजकुमारी उसके मेघ मल्हार पर बहुत मोहित हुई और सब कुछ जानते हुए भी अपंग राजा से शादी करने का निर्णय लिया।

जब राजकुमारी ने यह बात अपने माता-पिता को बताई तो वे हैरान रह गए। उसने उसे बहुत समझाया पर राजकुमारी ने अपनी जिद नहीं छोड़ी और अपने प्राण त्यागने का निश्चय कर लिया। आखिरकार, राजा और रानी को अपंग विक्रमादित्य से राजकुमारी से शादी करने के लिए मजबूर होना पड़ा। विवाह के बाद राजा विक्रमादित्य और राजकुमारी तेली अपने घर में रहने लगी और उसी रात को शनि देव जी ने राजा को सपने में आकर कहा कि हे राजन तुमने मेरा प्रकोप देखा है मैंने तुम्हें तुम्हारी सजा का दंड दिया है राजा शनि देव जी से

pdfinbox.com

क्षमा मांगने लगा - हे शनिदेव आपने जितना कष्ट मुझे दिया है, उतना किसी और को न दें।

शनिदेव ने कहा- राजन, मैं आपकी प्रार्थना स्वीकार करता हूं। जो भी पुरुष या स्त्री मेरी पूजा करता है, कथा सुनता है, जो निरंतर मेरा ध्यान करता है, चींटियों को आटा खिलाता है, वह सभी प्रकार के कष्टों से मुक्त हो जाता है और उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। यह कहकर शनि देव अंतर्ध्यान हो गए।

जब राजा विक्रमादित्य सुबह उठे तो अपने हाथ पैर देखकर राजा को बहुत खुशी हुई। उन्होंने मन ही मन शनिदेव को प्रणाम किया। राजा के हाथ-पैर सुरक्षित देखकर राजकुमारी हैरान रह गयी बाद राजा विक्रमादित्य ने पहले अपना परिचय दिया फिर शनिदेव जी के परकोप और शक्ति की पूरी कहानी सुनाई।

इधर सेठ को जब इस बात का पता चला तो वह दौड़ता हुआ आया और राजा विक्रमादित्य के चरणों में गिरकर क्षमा याचना करने लगा। राजा विक्रमादित्य ने उसे क्षमा कर दिया क्योंकि वह जानता था कि यह सब शनिदेव के प्रकोप के कारण हुआ है। सेठ ने फिर राजा विक्रमादित्य को अपने घर ले जाकर भोजन कराया। वहां खाना खाते समय एक हैरान कर देने वाली घटना घटी। सबकी नजरों में उस खूंटी ने हार उगल दिया। सेठ ने भी अपनी पुत्री का विवाह राजा से करवा दिया और बहुत सारे देने के बाद स्वर्ण आभूषण, धन राजा जी को विदा किया गया।

राजा विक्रमादित्य जब राजकुमारी मनभावनी और सेठ की पुत्री को लेकर अपने नगर लौटे तो नगरवासियों ने हर्षोल्लास से उनका स्वागत किया। अगले दिन राजा विक्रमादित्य ने पूरे राज्य में घोषणा करवा दी कि शनिदेव सभी ग्रहों में श्रेष्ठ हैं। प्रत्येक स्त्री-पुरुष शनिवार के दिन इनका व्रत रखते हैं और व्रत की

pdfinbox.com

कथा अवश्य सुननी चाहिए। राजा विक्रमादित्य की इस घोषणा से शनि देव बहुत प्रसन्न हुए। शनिवार का व्रत करने और व्रत कथा सुनने से शनि देव की कृपा बनी रहती है और व्यक्ति के सभी दुख दूर हो जाते हैं।

pdfinbox.com

pdfinbox.com